अजायब बानी

मासिक पत्रिका

मई-2024

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2023-2025
Published on 08th Dec. 2023, Posting at RMS, Sri Ganganagar on 10th or 11th Dec. 2023

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–बाइसवां	अंक–पहला	मई–2024

परमात्मा के शुक्रगुजार 3

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को अभ्यास में बिठाने से पहले दिया गया संदेश

मालिक पर भरोसा 9

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

जैसी संगत वैसी रंगत 19

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

पवित्रता का पालन 29

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम**
16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा**
99 50 55 66 71
उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 266 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी

1. कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, मैं हर पल तेरा शुकर करां, x 2
   मैं जीव निमाणां गुनाहगार, हर रोज नवां ही गुनाह करां, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, ना गुनाह करां, पर कबूल करां, कर मेहर मेरे तूं....

2. कर औगुण फिर पछतोना हां, नाले अंदरों–अंदरी रोना हां, x 2
   ऐह मुक जाए रोणा धोणा ही, मैं हर दम तेरा शुकर करां, कर मेहर मेरे तूं....

3. मन आइयां हर दम करदा हां, हंकार करां, एहसान करां, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, जो तू चोहनां मैं ओ ही करां, कर मेहर मेरे तूं....

4. तैनूं विसर के मेरे दाता जी, सारा दिन दुनिया नूं याद करां, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, भुल दुनियां तेरा दास बणां, कर मेहर मेरे तूं....

5. मैं सिमरन वी ते करदा नहीं, टिक सतसंग विच वी बैहंदा नहीं, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, सुण सतसंग सिमरन जाप करां, कर मेहर मेरे तूं....

6. मैं मंगदां सब कुछ तेरे तों, पर कहणे तेरे चलदा नहीं, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, तेरे भाणे रहणा सिख जावां, कर मेहर मेरे तूं....

7. जो है मेरे कोल सतगुरु जी, ओ तेरा ही ते दिता है, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, मन तेरा उसदा शुकर करां, कर मेहर मेरे तूं....

8. दुख सैहंदेया जिंदगी लंघ रही है, हुण ला लै अपणे चरणां विच, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, जिंद तेरे लेखे कर पावां, कर मेहर मेरे तूं....

9. करां लख शुक्राने सतगुरु जी, तेरे चरणीं अपणां सीस धरां, x 2
   कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, बण तेरा, तेरा शुकर करां, कर मेहर मेरे तूं....

10. मेरी अर्ज सुणों कृपाल गुरु, 'अजायब' नूं सब कुछ माफ करो, x 2
    कर मेहर मेरे तूं सतगुरु जी, मेरा लेखा–जोखा साफ करो, कर मेहर मेरे तूं....

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों को अभ्यास में बिठाने से पहले दिया गया संदेश

परमात्मा के शुक्रगुजार

दिल्ली

हमने सोचना है कि हम यहां क्यों इकट्ठे हुए हैं? इस समय अमृतवेला है, इस वक्त पक्षी भी जागते हैं। पक्षी भी अपने पैदा करने वाले के शुक्रगुजार होते हैं। फरीद साहब ने कहा है:

फरीदा हउ बलिहारी तिन्न पंखीआ जंगलि जिंन्ना वासु।
ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु।।

हम उन पक्षियों पर बलिहार जाते हैं जो सुबह इंसानों से भी पहले उठकर **परमात्मा के शुक्रगुजार** होते हैं। गुरु साहब कहते हैं:

चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग।
अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग।।

पक्षी सुबह अपनी जुबान में **परमात्मा के शुक्रगुजार** होते हैं और दूसरी ऐसी महान आत्माऐं भी इस संसार मंडल पर आती हैं जो उस वक्त सोते नहीं नाम के साथ जुड़ जाते हैं। हमारे ऊपर प्रभु–परमात्मा ने बहुत

भारी दया की है, उन्होंने हमें अपना भेद दिया है और नाम के साथ जोड़ा है। अब हमारा फर्ज बनता है कि हम उस 'शब्द–नाम' के साथ जुड़े रहें।

हमें यह नहीं कहना चाहिए कि सतगुरु ले जाएंगे, सतगुरु तो ले ही जाएंगे अगर बेटा अपनी जिंदगी में यही कहता रहे कि मैं तो पिता की कमाई खाऊंगा। यह ठीक है कि पिता तो खिलाएगा, पिता की जिम्मेदारी है लेकिन देखने वाले कहेंगे कि यह लड़का तो नालायक है, अपने पिता पर बोझ बना हुआ है।

हमें सतगुरु पर बोझ नहीं बनना चाहिए, हमें भी कुछ हिम्मत करनी चाहिए, पुरुषार्थ करना इंसान का धर्म है। पुरुषार्थ करके ही हम अपनी जिंदगी में परमात्मा के साथ जुड़ सकते हैं, कामयाब हो सकते हैं।

ज्यादा नाम की कमाई करने के लिए सबसे पहले हमने अपने शरीर को पवित्र रखना है, शरीर को विषय–विकारों में नहीं लगाए रखना। विषय–विकार कीचड़ है, कीचड़ लगने से शरीर मैला हो जाता है। हमारा शरीर पवित्र होगा तो हमारा मन जरूर पवित्र होगा क्योंकि शरीर का मन के साथ भी संबंध है।

हमारा मन जितना पवित्र होगा हमारी आत्मा उतनी ही ज्यादा पवित्र होगी। सच्चखंड से उठकर हमारे अंदर जो शब्द आ रहा है वह तो पवित्र है ही और जब हमारी आत्मा पवित्र हो जाती है तो कोई भी ऐसी ताकत नहीं जो उसे 'शब्द' से अलग रख सके। इसने अपने आप ही उसमें जाकर मिल जाना है। जिस तरह लोहे को जंग लगी है, चाहे आप मैग्नेट उसके ऊपर रख दें, वह मैग्नेट लोहे को ऊपर नहीं उठाएगा अगर लोहे को जंग नहीं लगी हुई तो मैग्नेट लोहे को फौरन अपनी तरफ खींच लेगा।

इसी तरह हमारी आत्मा है अगर हम शब्द सुनते भी हैं तो वह हमें नहीं खींचता क्योंकि हमारी आत्मा पर मैल चढ़ी हुई है। आत्मा की सफाई

के लिए सिमरन झाड़ू का काम करता है। हमें सोते–जागते, उठते–बैठते और किसी के साथ बातें करते हुए भी सिमरन को नहीं छोड़ना चाहिए।

मुख की बात सगल सिउ करता, जीअ संगि प्रभु अपुना धरता।।

प्रेमी लोग दुनिया के साथ बातें भी करते हैं, दुनिया के साथ व्यवहार भी करते हैं लेकिन उनके दिल की तार सिमरन के साथ लगी रहती है। सिमरन की तार हमें सतगुरु के साथ जोड़कर रखती है। प्रेमी की जुबान सदा तर रहनी चाहिए और प्रेमी अभ्यास न छोड़े अगर आप एक दिन अभ्यास में नहीं बैठते तो यह समझें कि हम भजन से बहुत दूर हो गए हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं:

इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा।।

एक दिन तो बहुत ज्यादा है, जिन महात्माओं ने उस परमात्मा को प्रकट किया है, वे कहते हैं कि एक क्षण या एक सेकंड परमात्मा या अपने प्यारे सतगुरु को भूल जाने पर पचास साल जितना फर्क पड़ जाता है। सोचें, जो बेचारे कई–कई दिन भजन नहीं करते या कई–कई घंटे सिमरन ही भूले रहते हैं, उनकी क्या हालत हो सकती है?

इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ।।

एक तिल जितना समय भी परमात्मा को भूल जाने से भक्ति में बहुत बड़ी दरार पड़ जाती है इसलिए हमेशा परमात्मा की याद बनाए रखनी है, **परमात्मा का शुक्रगुजार** होना चाहिए। परमात्मा की याद ही हमें तारेगी। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपसे भजन नहीं होता तो कम से कम सन्तों के साथ प्यार बना लें क्योंकि सन्त प्यार की मूरत होते हैं। आखिरी वक्त जहां हमारा झुकाव होगा, हमने वहीं जाना है। सन्तों के साथ प्यार है तो हमने सन्तों के बीच ही समाना है। सन्तों ने मालिक के पास ले जाना है लेकिन सन्तों की याद भी हम उस वक्त ही बना सकते हैं जब हम पवित्र होंगे।''

अगर हम दुनिया को थोड़ा–सा भी याद करें तो रात को बहुत आसानी से उसके सपने आने शुरू हो जाते हैं क्योंकि दुनिया का ख्याल बहुत जल्दी पक जाता है। गुरु का सपना क्यों कम आता है, गुरु का ख्याल जल्दी क्यों नहीं पकता? गुरु पवित्र हैं वे हमारे मैले हृदय में नहीं आते क्योंकि हम मन इंद्रियों के घाट पर हैं लेकिन कभी–कभी हमारा मन शांत होता है, थोड़ी–बहुत पवित्रता होती है।

जब हम सोते हैं तो गुरु अपनी दया से हमारी सुरत को ऊपर खींच लेते हैं उस वक्त हमें गुरु का सपना आता है। जिस दिन गुरु का सपना आता है, उस प्रेमी का दिल सारा दिन गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है लेकिन हमारा झुकाव नीचे की तरफ होता है। पवित्र न होने के कारण हम उनकी दया को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर सकते इसलिए जो कुछ वे हमें सपने में कहना चाहते हैं और कई बार कह भी देते हैं लेकिन हम भूल जाते हैं या उनकी पूरी आवाज सुन नहीं रहे होते हैं।

प्रेमी को सिमरन के जरिए ध्यान हमेशा तीसरे तिल की तरफ लगाकर रखना चाहिए। अगर एक बार आप तीसरे तिल पर इकट्ठे हो जाएंगे, आप थोड़ा–सा भी अपने ख्याल को इकट्ठा करने लग जाएंगे तो आपके अंदर बहुत भारी प्यार जागेगा फिर आप उस प्यार या लगन को छोड़ नहीं सकेंगे। जिस तरह आज लगाना मुश्किल है उसी तरह फिर छोड़ना भी मुश्किल है। गुरु अर्जुन देव जी महाराज कहते हैं:

तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी।।

आप देख लें कि प्रेमियों पर बड़े–बड़े कष्ट आए। मैं कई बार यह मिसाल दिया करता हूं कि दिल्ली में भाई मत्तीदास के पास आरा लाकर रख दिया और उससे कहा कि तू जिसकी खातिर जान दे रहा है, यह तेरे पास ही पिंजरे के अंदर बैठा है। यह अपनी रक्षा नहीं कर सकता तो तेरी रक्षा कैसे करेगा? हम तुझे कोई अच्छा ओहदा दे देते हैं, अच्छी धन–

दौलत दे देते हैं, तू इसका साथ छोड़कर हमारे मजहब को कबूल कर ले। उस वक्त मुसलमानों का बहुत जोर था।

अगर भाई मत्तीदास बाहर मुखी होते तो उनका भरोसा टूट जाता लेकिन वे अंदर जाते थे, वे देखते थे कि मेरे गुरु कुल मालिक हैं। भाई मत्तीदास ने कहा, ''आप मुझसे ऐसी बातें न कहें अगर आप मेरे ऊपर तरस करते हैं तो मुझे जल्दी आरे से चीर दें और मेरा मुंह मेरे प्रीतम की तरफ कर दें। भाई मत्तीदास के भरोसे को देखकर जल्लाद भी कांप उठा।

जिस तरह दीए की बत्ती धीरे–धीरे अपना सिर कटाती है वैसे–वैसे वह ज्यादा प्रकाश करती है। इसी तरह जब प्रेमी सिख के अंदर एक बार प्रेम लग जाता है और वह अंदर जाने लग जाता है तब अगर कोई भी घटना घटती है तो उसका प्रेम अपने गुरु के साथ नहीं टूटता। वह सोचता है कि यह मेरा कर्म है। इसलिए हमने दिल लगाकर अभ्यास करना है। पहले अभ्यास और बाद में दुनिया के काम। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि हमारी इस तरह की हालत हो जानी चाहिए:

हाथ कार वन्नी दिल यार वन्नी।

हाथों–पैरों से काम करें और अंदर नाम की तार बजती रहे, दिल की तार हमेशा ही सिमरन के साथ जुड़ी रहे। सिमरन और भजन–अभ्यास करना जरूरी है। सबसे पहले शरीर और मन की पवित्रता है अगर मन पवित्र है तब ही हम अभ्यास कर सकते हैं अगर हम मन को गंदा किए बैठे हैं तो हम अभ्यास नहीं कर सकते हैं क्योंकि सतगुरु जो दया करते हैं, वह तो हमारी सफाई पर ही लग जाती है फिर जब सतगुरु और थोड़ी–बहुत दया करते हैं, हम फिर मैल लगाकर बैठ जाते हैं।

आपके अंदर सतगुरु ताकत बैठी है, वह अंतर्यामी है। सांस–सांस के साथ आपको देख रही है यह भी न सोचें कि काल हमें नहीं देख रहा। हम जो हरकत सांस–सांस के साथ करते हैं, वह जरूर देख रहा है। वह उसे

लिखता है, सारा कुछ लेखे में है क्योंकि यह दुनिया काल की है अगर वह नहीं देख रहा हो तो पुण्य और पाप का लेखा–जोखा कौन करेगा? सतगुरु काल के साथ एक–एक जीव के लिए लड़ता है। जब हम विषय–विकारों की मैल से गंदे होते हैं, उसी वक्त काल गुरु से कहता है, ''आपने इसे नाम दिया है? यह देखें इसकी करतूत।''

गुरु के अंदर बहुत विश्वास होता है, गुरु बहुत सब्र वाले होते हैं। गुरु कहते हैं, ''कोई नहीं, यह जरूर सुधर जाएगा।'' अगर हम सिमरन करते रहते हैं तो सतगुरु हमारे ऊपर पूरी दया करते हैं और एक दिन हम कामयाब हो जाते हैं इसलिए हमें आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। कबीर साहब कहते हैं:

कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल।
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु।।

हमें आज कल करते हुए वक्त नहीं निकालना चाहिए कि कल भजन कर लेंगे या परसों भजन कर लेगें। जिस मन ने आपको आज यह सलाह दी है कि रात बड़ी है, कल अभ्यास कर लेंगे वह कल भी आपको राय देकर परसों पर डाल सकता है, वह अंदर ही है। इसलिए पहले दिन ही उसकी राय न मानें।

हम सबने दिल लगाकर भजन–सिमरन करना है। भजन–सिमरन एक ऐसी ताकत है जिसने हमारे साथ जाना है। क्यों न हम वह तोशा (रास्ते का खर्च) इकट्ठा करें जिसने हमारे साथ जाना है। दुनिया के काम भी करने हैं, दुनिया के काम भी वही आदमी अच्छे ढंग से कर सकता है जो 'शब्द–नाम' की कमाई करता है, वह 'शब्द–नाम' की कमाई को अपनी ड्यूटी समझेगा और **परमात्मा का शुक्रगुजार** होगा।

***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मालिक पर भरोसा

22 अगस्त 1977 | गुरु रामदास जी की बानी | सनबोर्न्टन, अमेरिका

सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ।।
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ।।

यह बानी गुरु रामदास जी महाराज की है। आपको अपने गुरु के साथ बहुत प्यार-मोहब्बत थी, आपका जन्म एक छोटे से घर में हुआ। आपने उबले हुए चने बेचकर गुजारा किया। आपके अंदर सेवा की बहुत लगन थी, आपकी शादी गुरु अमरदास जी महाराज की बेटी से हुई। आप सेवा में ऐसे लगे कि अपने-आप को भूल गए, आपने अपने ससुर को ससुर नहीं समझा बल्कि सतपुरुष समझकर उनकी सेवा की। गुरु अमरदास जी महाराज आपको नामदान देने का हुक्म दे गए। आप कहते हैं:

जिथै जाए बहै मेरा सतगुरु सो थान सुहावा राम राजे ।
गुरसिखीं सो थान भालया लै धूर मुख लावा ।।

सतगुरु जहां जाकर बैठ जाते हैं वह स्थान पूजा के काबिल है, वह धरती हरी-भरी हो जाती है। गुरु सिख उस स्थान को ढूंढ लेते हैं जहां गुरु प्रकट होते हैं। वे जिन्हें नामदान दे देते हैं वे भी हरियावले हो जाते हैं।

धनु धंनु पिता धनु धंनु कुलु ।
धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ ।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, ''वे माता-पिता और कुल धन्य है जिन्होंने इतने सूरमे बच्चे को जन्म दिया।''

धनु धंनु गुरू जिनि नामु अराधिआ।
आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ।।

कबीर साहब कहते हैं :

जननी जने तां भगत जन या दाता या सूर ।
नहीं तो जननी वांज रहे काहे गवाए नूर ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''वे सतगुरु धन्य हैं जिन्होंने नाम लेकर अराधना की, कमाई की। मालिक की तरफ से उन्हें परमपद का इनाम मिला और वे मुक्त हो गए। उन्हें मालिक की तरफ से इतनी परमिशन मिल गई कि बेशक! यम भी क्यों न पकड़कर बैठे हों जो भी प्यार से उनके दर्शन करता है वे फौरन हाजिर होकर उसे भी छुड़वा लेते हैं।''

हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ।।

आप परमात्मा के आगे फरियाद करते हैं कि हे परमात्मा, हे वाहेगुरु, हे अकाल पुरख, जीव में ताकत नहीं कि सन्तों को समझ सके और उनसे मिल सके। आप मेरे ऊपर दया–मेहर करें, मुझे ऐसे सन्त–सतगुरु से मिलाएं ताकि मैं उनके पैर चूम लूँ और अपने जीवन को सफल कर लूँ।

धर्मदास एक बनिया था, वह चौदह करोड़ का मालिक था और 'धनी धर्मदास' कहलाता था। वह पत्थर के ठाकुर की पूजा करता था। एक दिन कबीर साहब साधु का भेष धारण करके उसके पास चले गए और कहने लगे, ''क्या ये बड़े–बड़े दो सेर हैं, छोटी–छोटी छटांकियां हैं, क्या ये कभी बोले भी हैं?'' इतना कहकर कबीर साहब वहां से अलोप हो गए। अब धर्मदास के दिल में खयाल आया कि वास्तव में ये कभी बोले तो नहीं अगर साधु रूकते तो मैं उनसे जरूर कुछ पूछ लेता।

कुछ दिनों बाद फिर कबीर साहब साधु का रूप धारण करके धर्मदास के घर गए। धर्मदास उस समय लकड़ियां धोकर जला रहा था। हिन्दुस्तान में भगत लोग इतनी पवित्रता रखते थे कि वे लकड़ियां धोकर जलाते थे। कबीर साहब ने कहा, ''धर्मदास तू तो बड़ा पापी है।'' नजदीक में धर्मदास की पत्नी बीबी आमना खड़ी थी। औरत से अपने पति की निंदा नहीं सुनी गई। वह कहने लगी, ''मेरा पति क्यों पापी, पापी तू होगा।'' कबीर साहब

ने कहा, ''जरा लकड़ी फाड़कर जलाओ।'' इतना कहकर कबीर साहब गायब हो गए। जब लकड़ी फाड़कर देखी तो उस लकड़ी के अंदर लाखों ही जीवित और मरे हुए कीड़े थे।

धर्मदास ने पछताते हुए अपनी पत्नी से कहा, ''अगर तू साधु पर गुस्सा नहीं करती तो मैं उनसे कोई बात पूछ लेता अपनी शंका दूर कर लेता। उसकी पत्नी ने कहा कि आप यज्ञ करें, अनेकों साधु आ जाएंगे, गुड़ पर मक्खियाँ ढेर। धर्मदास धनी आदमी था, उसने काशी और गंगा–यमुना पर काफी यज्ञ करवाए और पूरे चौदह करोड़ रुपए यज्ञों पर लगा दिए। पास में पैसे भी नहीं रहे और वे साधु भी नहीं आए क्योंकि कबीर साहब ने न आना था और न ही वे आए। अब सोचता है कि रुपया भी नहीं रहा और साधु भी नहीं मिले, अब क्या करें? हो ना हो अब दरिया में छलांग लगाकर मर जाऊं फिर सोचता है अगर यहां दरिया में छलांग लगाऊंगा तो लोग पकड़ लेंगे, थोड़ा आगे चलकर छलांग लगाता हूं।

जब धर्मदास थोड़ा आगे गया तो वहाँ कबीर साहब बैठे थे। धर्मदास ने कबीर साहब को पहचान लिया और उनके पैरों में गिर कर कहने लगा,''महाराज जी, अगर आप मुझे पहले मिलते तो मैं आपकी कोई सेवा करता अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं है।'' कबीर साहब ने हंसकर कहा, ''अगर मैं पहले मिलता तो तूने कहना था कि कबीर साहब लालची हैं और तेरी पत्नी ने कहा था कि गुड़ पर मक्खियां ढेर। अब मैं तुझे वह चीज दूंगा जो कभी नाश नहीं होती।'' कबीर साहब ने उसे नाम दिया, कबीर साहब के बाद धनी धर्मदास ही कबीर साहब की गद्दी पर बैठा।

गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं कि सतगुरु की बड़ाई, उपमा सिर्फ उनके सिखों के मन को ही अच्छी लगती है, वे ही उनकी बड़ाई कर सकते हैं। जिसने उन्हें देखा है कि गुरु किस ताकत का मालिक है, गुरु

क्या है? जिसने मिश्री नहीं खाई वह मिश्री का स्वाद नहीं बता सकता। सन्त सतगुरु कहते हैं कि दुनियावी तौर पर आप हमें बड़ा भाई या बुजुर्ग कह लें लेकिन आपको अंदर जाकर ही पता चलेगा कि हम क्या हैं, अंदर जाकर जो मर्जी कह लें अगर हम महात्माओं को पहचान लेते तो क्या गुरु नानक देव जी से चक्कियां पिसवाते, उन्हें कुराहीया कहते? यहां तक कि गुरु नानक देव जी को कसूर के इलाके में एक गांव के लोगों ने रात को रहने नहीं दिया। गुरु नानक देव जी ने एक कोढ़ी की कुटिया में जाकर रात काटी और उस कोढ़ी का कोढ़ दूर हो गया।

गुरु अमरदास जी महाराज खडूर साहिब में रहते थे, वहां एक तपा योगी भी रहता था। गुरु साहब के वहां रहने से उस योगी के तंत्र–मंत्र में और उसकी मान्यता में फर्क पड़ता था। वह रोज ही सोचता था कि किस तरह से उनको गांव से निकाला जाए।

एक बार वहां बारिश नहीं हुई, सूखा पड़ गया। उस गांव के लोगों ने गुरु साहब के पास आकर कहा महाराज जी, ''सूखा पड़ गया है, भूखे मर रहे हैं बारिश करवाएं।'' महाराज जी ने कहा, ''मालिक का भाणां माने।'' सन्त हमें मालिक के भाणे में रहने का हुक्म देते हैं लेकिन तपा योगी इस मौके का फायदा उठाना चाहता था। उसने कहा, ''आप लोग उन्हें गुरु मानते हैं उनसे कहें बारिश करवा दे नहीं तो आप उनका डेरा यहां से उठ्वा दें, मैं बारिश करवा दूंगा।''

किसान मतलब के दोस्त होते हैं, उन्होंने गुरु साहब से कहा, ''आप बारिश करवाएं या अपना डेरा यहां से उठा लें।'' गुरु साहब भाणे में खुश थे इसलिए वे वहां से डेरा उठाकर आगे चले गए। अब लोग तपा योगी के पीछे पड़ गए। उसने बहुत तंत्र–मंत्र किए लेकिन बारिश नहीं हुई।

भाई जेठा जो बाद में गुरु रामदास जी बने, वे जब वहां आए तो उन्हें गुरु साहब दिखाई नहीं दिए। वहां के लोगों ने कथा सुनाई कि किस तरह

तपा योगी ने लोगों से कहकर गुरु साहब को यहां से निकलवा दिया है। भाई जेठा बहुत ही उदास हुए कि उसने बारिश के लिए गुरु साहब के साथ ऐसा व्यवहार किया। भाई जेठा ने कहा, ''आप लोग योगी से कहें कि वह बारिश करवाए।'' लोगों ने कहा कि अब योगी बारिश नहीं करवा सकता।

भाई जेठा ने कहा, ''मैं आप लोगों को एक युक्ति बताता हूं, आप योगी को जिसके भी खेत में लेकर जाएंगे वहां ज्यादा बारिश होगी।'' किसानों को अपने मतलब की होती है, उन्होंने आव देखा न ताव देखा सब कहने लगे कि पहले मेरे खेत में चल, सारे किसान आपस में गुस्सा–गिला करने लगे। किसी ने योगी का हाथ खींचा तो किसी ने पैर खींचा, उसके हाथ पैर टूट गए। जिस खेत में उस योगी का एक तिनका भी गिरा, वहां बहुत भारी बारिश हुई।

जब गुरु अमरदास जी को यह पता चला कि भाई जेठा ने ऐसा किया है तो उन्होंने भाई जेठा के आने पर उसकी तरफ पीठ कर ली। जब भाई जेठा उस तरफ मुंह करके दर्शन करने लगे तो गुरु साहब ने फिर उसकी तरफ पीठ फेर ली और कहने लगे कि मैंने तुम्हें परमात्मा में जज्ब रहने के लिए कहा है न कि करामात दिखाने के लिए। योगी को गुरु की बड़ाई अच्छी नहीं लगी, सिखों को गुरु की बड़ाई अच्छी लगी।

हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ।।
गुर सतिगुर कै मनि पारब्रहमु है पारब्रहमु छडाई ।।

जब सन्त–महात्मा इस दुनिया में प्रकट होते हैं, दुनिया उन्हें देखकर खुश नहीं होती, उनके मिशन को अनेक प्रकार से दबाने की कोशिश करती है लेकिन मालिक को जीवों का फिक्र होता है। परमात्मा ने सन्त–महात्माओं को संसार में भेजा होता है और उनके मिशन में उनकी मदद करता है। सन्त–महात्माओं को **मालिक पर भरोसा** होता है, श्रद्धा होती है और वे मालिक का ही काम करने के लिए आते हैं।

जब महाराज सावन सिंह जी ने शुरू–शुरू में नामदान का प्रचार किया तो उस वक्त वहां के विरोधियों ने हर तरह से उनकी विरोधता करने की कोशिश की लेकिन महाराज सावन सिंह जी ने उनके साथ भी प्यार दिखाया और कहा कि लंगर गुरु का है, आप खाना यहां से खा लिया करें। विरोधी उनकी खिलाफत का प्रचार करते रहे।

महाराज सावन सिंह जी ने कभी भी उनके विरोध का जवाब नहीं दिया बल्कि वे कहते, ''कोई बात नहीं, ये हमारा ही काम कर रहे हैं।'' विरोधी जितने भी आदमियों को बुलाते वे सब महाराज सावन सिंह जी का यश गाते और नाम लेकर जाते थे। कुछ समय बाद वे वहाँ से चले गए, आजकल वहाँ स्कूल बना हुआ है। उन्होंने सोचा अगर हम इसी तरह लोगों को बुलाते रहे, निंदा करते रहे तो हो सकता है कि सारी दुनिया ही सतसंगी हो जाए। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निंदा करने वाला अपना छोटा होने का सामान बना रहा होता है।''

गुर सतिगुर ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई।।
जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''जिन्होंने प्यार से मेरे सतगुरु का दर्शन किया, दर्शनों से ही उनके सब पाप खत्म हो गए। सतगुरु निमाणों का मान, कमजोरों की ताकत और बेसहारों का सहारा होता है।''

हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई।।
जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन जो गुर के सिख मेरे भाई।।

आप कहते हैं, ''वे जीव धन्य थे जिन्हें ऐसे महापुरुष से नामदान मिला, जिन्होंने भी उस गुरु से नामदान प्राप्त किया दरगाह में उनके मुख उजले हुए, उन्हें दरगाह में भी शाबाश मिली।''

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''मैं ऐसे लोगों की धूल मांगता हूं जो मेरे गुरु के शिष्य हैं या मेरे गुरु भाई हैं।'' कमाई वाले महात्मा के दिल में अपने गुरु–भाइयों के साथ सच्चा प्यार और सच्ची इज्जत होती है।

सतसंगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ।।

आप कहते हैं, ''सतसंग में साधु हमारे अंदर नाम जपने का शौक, विरह, तड़प पैदा करते हैं। सतसंग में मालिक की महिमा गाई जाती है।''

ओइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि पर उपकारिआ।।

वे महात्मा धन्य हैं जो परोपकार के लिए उपदेश करते हैं।

हरि नामु दृड़ावहि हरि नामु सुणावहि हरि नामे जगु निसतारिआ।।

वे नाम की महिमा बताते हैं, नाम जपवाते हैं और यह भी बताते हैं कि किस तरह बैठकर नाम जपा जाता है। वे नाम के फायदे बताते हैं और बताते हैं कि नाम क्यों जपना है इसलिए वे धन्य हैं।

गुर वेखण कउ सभु कोई लोचै नव खंड जगति नमसकारिआ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''सारी दुनिया जिसने भी नौ खंड, पृथ्वी पर जन्म लिया है, गुरु को देखना चाहती है कोई यह नहीं कहता कि मैं

गुरु से न मिलूँ लेकिन मालिक जिनके कर्मों में अक्षर नहीं डालते वे कभी भी गुरु से नहीं मिल सकते, चाहे गुरु पड़ोस में ही क्यों न बैठे हों।

तुधु आपे आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''आपने खुद अपने मिलने का कुदरती तरीका रखा हुआ है कि पहले गुरु से मिलें फिर ही मुझसे मिल सकते हैं। यह तरीका उन्होंने अपने आप ही बनाया, संवारा और अपने चरणों में जगह दी।'' गुरु अपने आप नहीं बनते।

तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ।।

गुरु रामदास जी परमात्मा की महिमा करते हैं कि आप खुद ही सतगुरु की पूजा करवाते हैं, आप धन्य हैं। आप ही सतगुरु को सिरजते हैं और इस दुनिया में भेजते हैं।

कोई विछुड़ि जाइ सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जमि मारिआ।।

यह परम सन्तों की बानी है जिनकी आंखें खुली थी, वे मालिक रूप थे। जो सतगुरु से बिछुड़ जाए या नाम लेकर कमाई न करे या शराब–कबाब में लग जाए तो सजा के तौर पर काल उसका मुंह काला करता है, उसे बहुत कष्ट देता है।''

हुजूर कहा करते थे कि बाहर से मेरा हाथ नरम लगता है पर अंदर से लोहे की तरह सख्त है। पाप करना, निंदा करना, किसी का बुरा सोचना, सतसंगी को इस तरह करने का हुक्म नहीं है बल्कि वह बेसतसंगी का लिहाज करेगा क्योंकि वह अंधा है और सतसंगी सुजाखा है इसलिए उसे ज्यादा सजा मिलेगी।

तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिआ।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''न उसे यहां सहारा है न आगे सहारा है। यहां दुनिया कहती है कि गुरु से नाम लेकर अब शराब–कबाब का सेवन

करता है और आगे उसे गुरु जगह नहीं देते।'' गुरु सिखों ने अच्छी तरह विचार करके यह बानी लिखी है।

सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ।।

अब आप कहते हैं, ''जो सतगुरु से मिलकर नामदान प्राप्त करते हैं उनका ही उद्धार होता है।''

जन नानक के गुरसिख पुतहहु हरि जपिअहु हरि निसतारिआ।।

गुरु रामदास जी सारा शब्द कहकर आखिर में कहते हैं कि सन्तों के लिए बच्चे खास नहीं होते, संगत ही उनके बच्चे होते हैं। मैं आपको यही नसीहत देता हूं कि आप मेरे प्यारे बच्चे बनकर नाम की कमाई करें, काल के हाथ नहीं चढें। ऊंचे भाग्य हैं कि सतगुरु मिले और नाम दिया, नाम की कमाई करें अगर हम फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए इकट्ठा कर लेते हैं और मन की स्टेज से ऊपर चले जाते हैं तो गुरु हमें परम पद का इनाम देते हैं।

गुरु गोबिन्द सिंह जी के चार लड़के थे, जब दुश्मनों ने चारों को शहीद कर दिया तो उनकी माता रोने लगी। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने संगत की तरफ इशारा करके कहा:

इन पुतरन के सीस पर वार दिए सुत चार,
चार मुए तो क्या हुआ जीवत कई हजार।

इन बेटों के ऊपर मैंने चार बेटे वार दिए तो क्या हो गया? ये हजारों अपने ही बच्चे हैं।

हमें भी चाहिए कि गुरु साहब के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करें, इंसानी जामे में भजन सिमरन का जो मौका मिला है उसका फायदा उठाएं और अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

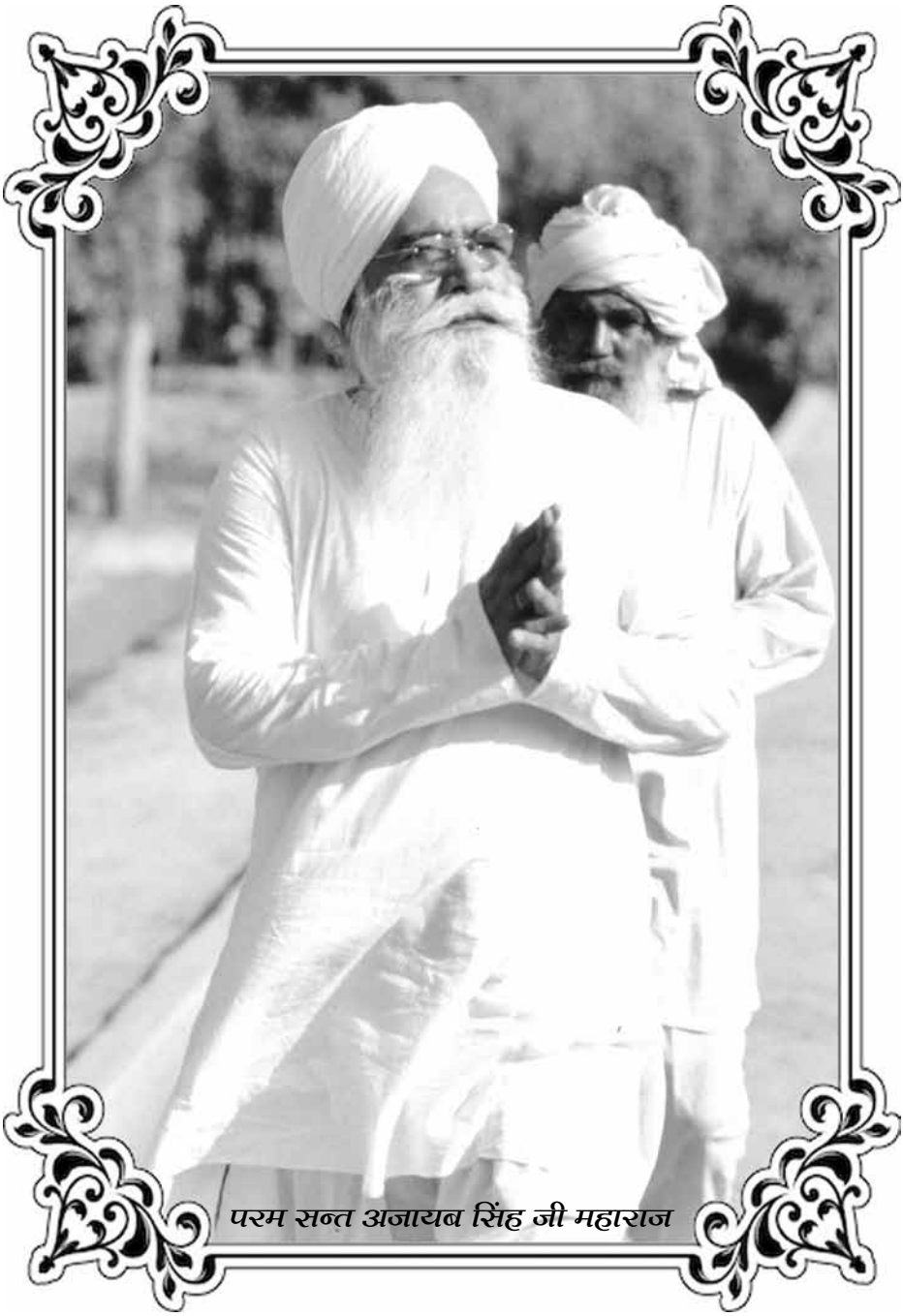

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

जैसी संगत वैसी रंगत

31 जनवरी 1990 — 16 पी. एस. आश्रम (राजस्थान)

एक प्रेमी: *बच्चों के कार्यक्रम में मैंने एक जगह पढ़ा है कि हमें अपने बच्चों को सतसंग में लाना चाहिए। बैंगलोर में आपने कहा था कि जब बच्चा पन्द्रह–सोलह साल का हो जाए तो माता–पिता को उसे सिर्फ सुझाव देना चाहिए। अगर सतसंगियों का नामलेवा पन्द्रह साल से ऊपर का बच्चा सतसंग में न जाना चाहे या हर रोज अभ्यास न करना चाहे तो क्या उसे खुला छोड़ देना चाहिए? अगर हम बच्चे के साथ जोर–जबरदस्ती करते हैं तो उससे बच्चे पर बुरा असर पड़ता है?*

बाबा जी: हाँ भाई, हमारे धर्म–शास्त्रों में बच्चों के बारे में ऐसा ही लिखा है। मैं भी आमतौर पर बताया करता हूँ कि संगत की रंगत बहुत अच्छी चढ़ती है। जब बच्चे छोटे होते हैं, माता–पिता के साथ काफी जुड़े होते हैं और उन पर ही निर्भर होते हैं अगर शुरू से बच्चों की आदत बनाई हो, अभ्यास–सतसंग और पढ़ाई के फायदे बताए हों तो मेरा ख्याल है कोई ऐसी वजह नहीं कि आपका बच्चा पंद्रह साल के बाद भटक जाए।

हिन्दुस्तान में मेरा बड़ा परिवार था, मुझे माता–पिता के साथ कुछ अरसा गुजारने का टाईम मिला। हमने कभी अपने माता–पिता को कोई बुरी हरकत करते हुए नहीं देखा था। वे हमारे सामने एक उदाहरण बनकर पेश आए। पति–पत्नी का रिश्ता प्रेम–प्यार का होता है, एक–दूसरे की आलोचना करने या झगड़ा करने का नहीं होता। माता–पिता की अच्छी हरकतों का बच्चों पर बहुत अच्छा असर पड़ता है।

हमें इतिहास में अनेकों उदाहरण भी मिल जाते हैं और हमारी आँखों–देखी भी ऐसी घटनाऐं हैं कि माता–पिता ने अपने बच्चों को बहुत अच्छा बनाया है, अपने बच्चों के सामने कोई बुरी हरकत नहीं की, वे एक

उदाहरण बनकर उनके सामने पेश आए। कमी यह होती है कि माता–पिता बच्चों के सामने बुरे उदाहरण बनकर पेश आते हैं। बच्चों के सामने बुरी हरकतें करते हैं, एक–दूसरे का विरोध करते हैं और झगड़ा करने लग जाते हैं, जिस कारण कई बार बच्चा उनसे तंग भी हो जाता है। बच्चा यह भी शिकायत करता है कि जब माता–पिता इतने सालों से सतसंग में जा रहे हैं अगर ये नहीं सुधरे तो हमारा क्या होगा? बच्चा सतसंग के लिए अभाव ले आता है। मुझे इंटरव्यू में कई बार बच्चे कहते हैं कि जब हमारे माता–पिता की यह हालत है तो हम क्या आशा लगाकर बैठे हैं?

महाराज सावन सिंह जी ने अपने बच्चों की कहानी भी बताई कि नौकरी के दौरान जो लोग उनके मकान के नीचे रहते थे, वे महाराज सावन सिंह जी के बच्चों को मीट–शराब के लिए ज़्यादा से ज़्यादा प्रेरित करते थे लेकिन उनके बच्चे इसलिए राज़ी नहीं हुए क्योंकि उन पर माता–पिता का बहुत अच्छा असर था। आखिर में उस आदमी ने महाराज जी से कहा कि आपने अपने बच्चों को बहुत पक्का किया हुआ है। हमने इनको लालच भी दिया कि आप मीट–शराब खाएं लेकिन बच्चे इस बारे में सुनने के लिए भी तैयार नहीं हुए।

महाराज सावन सिंह जी सतसंग में यह भी बताया करते थे कि जब बच्चा बराबर का हो जाता है अगर उस वक्त माता–पिता उस पर दबाव डालेंगे तो वह भटक जाएगा, विरोध करेगा। महाराज जी यह भी कहा करते थे जैसे माता–पिता वैसे बच्चे। अगर माता–पिता का चाल–चलन अच्छा है, उनके ख्याल अच्छे हैं, वे बच्चे को शुरू से ही सही रास्ता दिखा रहे हैं तो कोई ऐसा कारण नहीं कि बच्चा भटक जाए। बच्चे भोली आत्माएं होते हैं। उनका जीवन माता–पिता की छत्र–छाया के नीचे ही अच्छा बनता है ।

प्यारेयो, मेरे जीवन की ऐसी बहुत सी घटनाएं हैं जो बताई जाएं तो कई ग्रन्थ भी बन सकते हैं। मैं बताया करता हूँ कि बचपन से ही मुझे अंदर

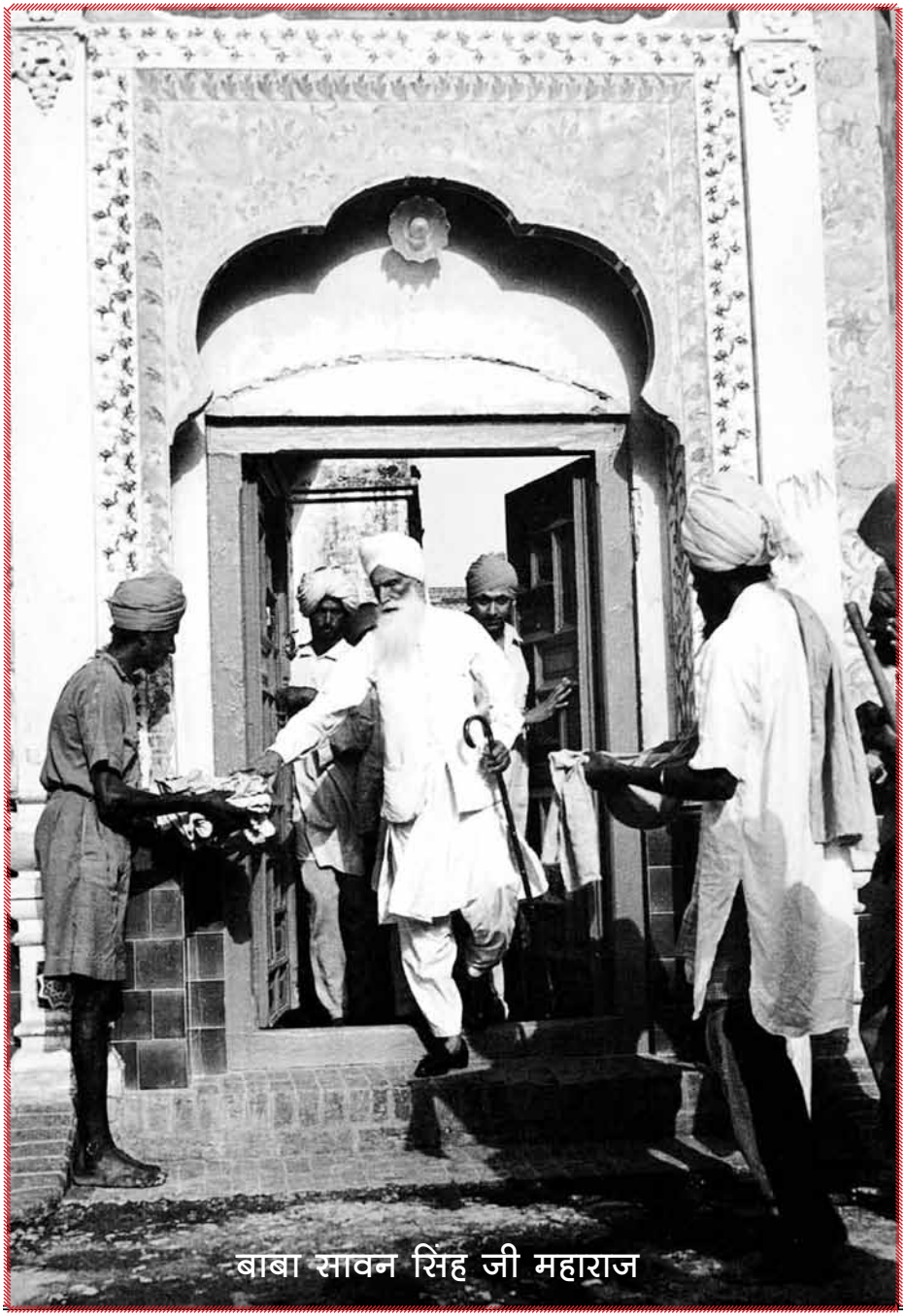

बाबा सावन सिंह जी महाराज

से ईश्वरीय ताक़त की कमी महसूस होती थी। मैं समझता था कि मेरी कोई वस्तु गुम है जिसकी मुझे शुरू से ही तलाश लगी रही लेकिन मैं जवान होने पर ही घर छोड़ सका। मैं यह भी बताया करता हूँ कि मेरी माता बहुत भक्तिभाव वाली और नरम ख्यालों की थी। मेरे पिता जी सख्त ख्यालों के थे लेकिन मुझमें यह ताक़त नहीं थी कि मैं अपने माता–पिता की विरोधता कर सकता। मैंने अपने पिता को अपने ऊपर खुश भी कर लिया था। बच्चे में हिम्मत ही नहीं रहती कि वह माता–पिता के बताए रास्ते पर न चले।

मैं हिन्दुस्तान में काफी फिरकों, मठों और साधु–सन्यासियों के पास गया हूँ। अफ़सोस से कहना पड़ेगा कि उन लोगों को तम्बाकू और शराब पीने की आदत थी। उनमें कई घटिया दर्जे की हरकतें देखने को मिलीं लेकिन मैं किसी पर अभाव नहीं लाया क्योंकि वहां भी मेरे ऊपर माता–पिता का असर रहा। मैंने शराब और तम्बाकू को हाथ नहीं लगाया और कोई बुरी हरकत नहीं की।

जब मैंने मालिक की तलाश में घर छोड़ा, उस समय मैं बिल्कुल जवान था। जब मैं घर से चलने लगा तो मेरी माता ने मुझसे तीन–चार वचन कहे थे जिनकी मैं आज भी पालना कर रहा हूँ। वे वचन यह थे, ''देख बेटा, अगर शादी करनी हो तो घर आकर करवा लेना, हमारी बदनामी मत करवाना कि यह उस औरत के पीछे फिरता है, वहां व्याभिचार करता है। दूसरा वचन यह था कि बेटा अपना कपड़ा पहनना किसी का दिया हुआ कपड़ा नहीं पहनना अगर कोई लाकर देता है तो उसे उतना मूल्य जरूर चुका देना फिर ही उस कपड़े को पहनना हैं।''

हमारे हिन्दुस्तान में जमींदारों में यह एक बहुत बड़ी कमी पाई जाती है, अगर किसी का खेत रास्ते पर लगता है तो वह उस रास्ते को बहुत छोटा कर देता है। मेरे पिता ने कहा, ''देख भई, अगर तुम्हारा खेत किसी रास्ते के साथ लगता है तो जो सरकारी रास्ता छोड़ा गया है उससे ज़्यादा अपना रास्ता छोड़ देना ताकि आने–जाने वालों को कोई तकलीफ न हो।

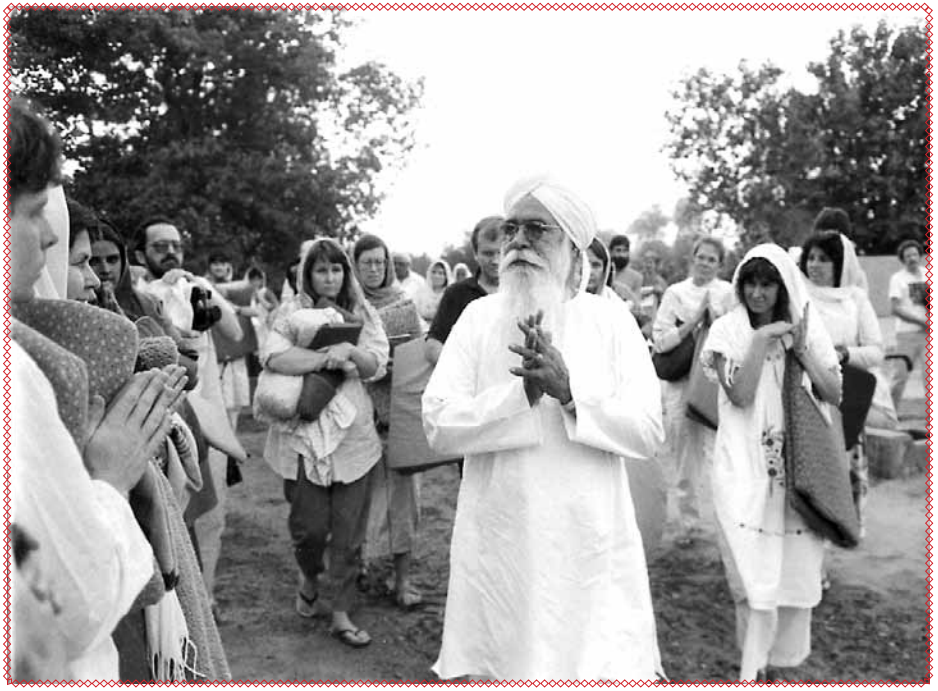

मैं इस वचन की भी पूरी पालना कर रहा हूँ। यह मेरी ताक़त नहीं थी कि मैं इतना कुछ सीख लेता या इतना कुछ कर लेता। यह उन बुजुर्गों की ही दया–मेहर थी कि उनका रंग मुझ पर चढ़ा हुआ था।

मैंउदासियों में गया उनमें तम्बाकू और शराब पीने की ज़्यादा से ज़्यादा आदत है। मुझे उनके साथ घूमने–फिरने का काफी मौका मिला। मैं सोचता था कि जो लोग माला पहन लेते हैं, कपड़े भगवे रंग लेते हैं, उन्हें भगवान जरूर मिले होंगे, वे भगवान रूप ही हैं। मैं उन लोगों की बहुत कद्र करता था, जहां भी किसी भगवे कपड़े वाले को देखता, उसे ज़रूर नमस्कार करता था। जब मुझे उनके बीच जाने का मौका मिला और मैंने उनमें ये हरकतें देखी। तब मुझे कई बाबाओं ने धमकाया भी कि हम तुम्हें चेला तभी बनाएंगे अगर तुम इन चीज़ों का इस्तेमाल करोगे। मैंने उनसे कहा, ''मुझे ऐसे गुरु धारण करने की कोई ज़रूरत नहीं है।''

प्यारेयो, यह मेरे माता–पिता का असर था जो मैं उनकी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ सका। उन बुज़ुर्गों ने अपने घर की कितनी स्वच्छता रखी थी। अगर किसी का बच्चा भटकता है तो उसकी ज़िन्दगी खुश्क करने में उसके माता–पिता का ही हाथ होता है। मुझे इंटरव्यू में अनेक लड़के–लड़कियां और कई बड़े भी मिलते हैं जो कहते हैं कि हमारे माता–पिता ने हमारे साथ जो बुरी हरकतें की हैं, हमने भूलने की बहुत कोशिश की लेकिन हम उन्हें भुला नहीं सके। पप्पू को पता ही है कि ऐसी बातें इसे आम सुनने को मिलती हैं क्योंकि पहले तो इसी के कानों में पड़ती हैं।

इस बारे में महाराज सावन सिंह जी एक ऊंटनी की कहानी सुनाया करते थे कि उसकी माता को पानी में बैठने की आदत थी और उस ऊंटनी में भी वही हरकतें थी। हमने बहुत सी गायें रखी हैं। यह बड़े मज़े की बात है जो हरकतें उस गाय में होती हैं वही हरकतें उसके बछड़े में भी होंगी। जो गाय ज़्यादा दूध देती है, उसकी बछड़ी भी ज़्यादा दूध देती है। अगर वह बुरी हरकतें करती हैं तो उसके बच्चे में भी वही हरकतें होती हैं।

आम लोगों से मेरी गायें महंगी बिकती हैं। हर एक को पता है कि बाबा जी की गायें बहुत अच्छा दूध देती हैं, वह मारती नहीं, अच्छी हैं। आप सोचकर देख सकते हैं अगर अच्छे माता–पिता का पशु–पक्षियों पर असर हो सकता है तो इंसानों का बच्चों पर कितना असर हो सकता है।

बच्चे का कसूर नहीं होता अगर उसकी पहले ज़िन्दगी बनाई हो तो वह पंद्रह साल का होकर माता–पिता का विरोध नहीं करेगा। वह जहाँ भी जाएगा माता–पिता की शान को ज़रूर ऊँचा करेगा। इस तरह के बच्चे ही अपने देश का नाम ऊँचा करते हैं। अपने देश, अपनी कौम और अपने माता–पिता के लिए वफादार होते हैं। अगर ऐसी आत्माएं गुरुमत में आ जाती हैं तो वह भी एक सोने पर सुहागा वाली कहानी होती है। वह कभी भी अपने गुरु को दुनिया में बदनाम नहीं करते बल्कि लोगों में खुशबू

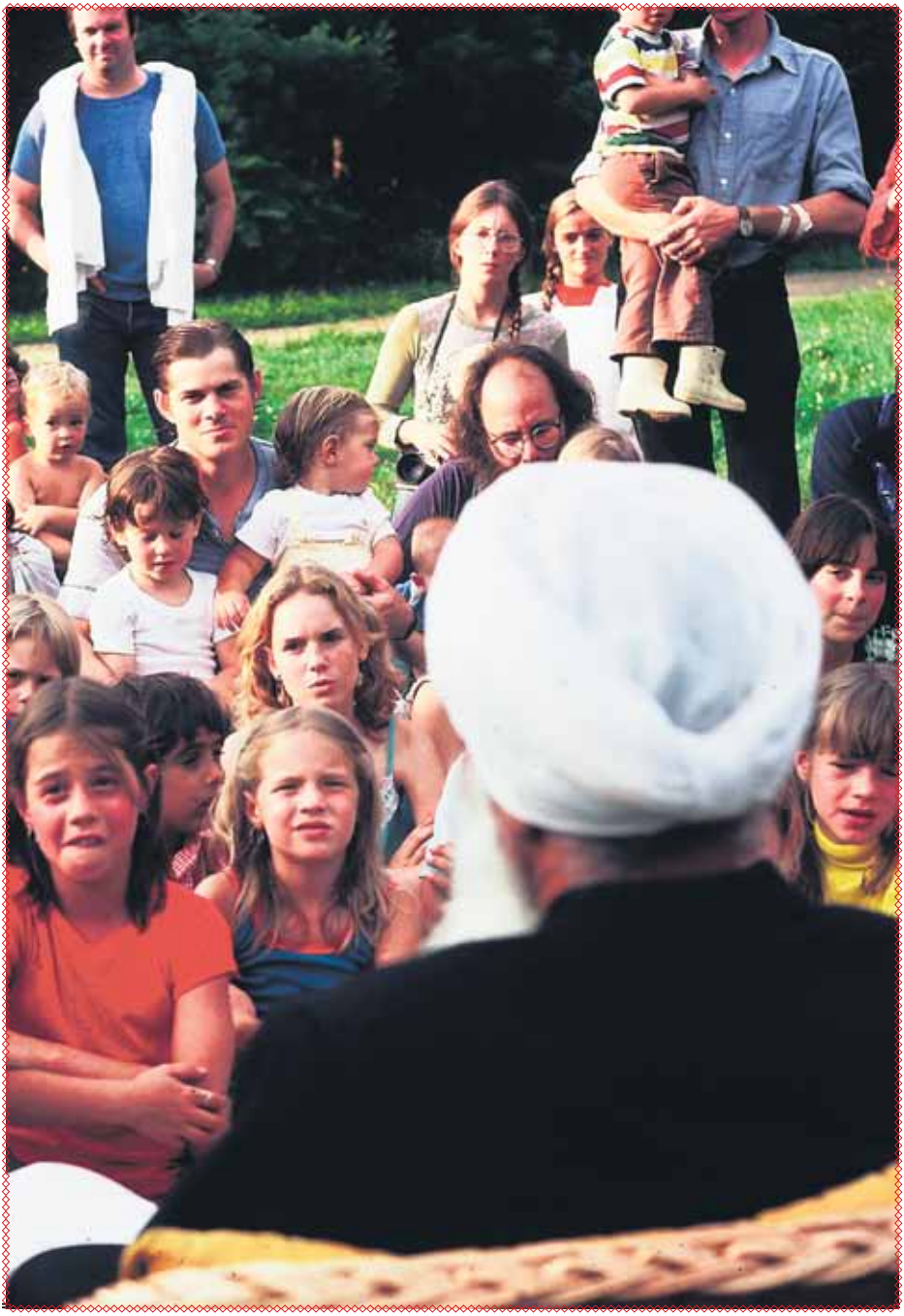

फैलाते हैं। लोग यही कहते हैं कि काश! इसका गुरु हमें भी मिला होता, हमारी भी ज़िन्दगी ऐसी ही होती।

मुझे हिन्दुस्तान में भी अनेक बच्चे मिलते हैं, कईयों के पत्र भी आ जाते हैं जो कहते हैं कि हम उस समय जवान क्यों नहीं थे, जब महाराज कृपाल हुए हैं जिनकी आप इतनी महिमा गाते हैं, उन्हें प्यार का समुन्द्र कहते हैं, हम भी उनसे प्यार प्राप्त कर लेते। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि बच्चे ही माता–पिता को उजागर करते हैं और गुरु को भी दुनिया में शिष्य ही उजागर करते हैं।

प्यारेयो, मुझे पहले टूर पर ही सुनने को मिल गया था जो यह कहते थे कि हमने तो उन्हें इंसान ही समझा था अगर हमें यह पता होता कि इंसान के चोले में सचमुच भगवान आए हैं तो हम उन्हें भगवान रूप ही मानते। हम फिर भी अपने ऊँचे भाग्य समझते हैं जिन्हें जीते–जी यह तो पता चला कि वह भगवान थे। उनके कई खास नजदीकी रिश्तेदार भी मिले, उनके प्यारे भी मिले जिन्होंने खुद इक़बाल किया कि हमने तो सारी ज़िंदगी उनकी विरोधता की लेकिन उनका बड़ा तगड़ा दिल था, उन्होंने कभी हमें बुरा नहीं कहा। अब पता चला है कि वे सचमुच ही भगवान थे।

मैं यही आशा करता हूँ कि माता–पिता अपनी ज़िम्मेदारी से काम लें। बच्चों को बचपन से ही सतसंग, नाम, अच्छी ज़िन्दगी बनाने और अच्छी पढ़ाई करने का सही और अच्छा मार्ग दर्शन दें जिससे वे बड़े होकर माता–पिता को भी सुख दें। बच्चे देश की भी दौलत होते हैं, वे देश का भी भला कर सकें। आपके पश्चिम से ही बहुत सारे बच्चे जवान होकर कॉलेजों में गए हैं और भी अपने माता–पिता से दूर रहे हैं। कई बच्चे यहाँ हिन्दुस्तान में पढ़ाई करने के लिए आए हुए हैं। वे जहाँ भी जाते हैं, सतसंग ढूँढ़ते हैं, अपना भजन–सिमरन भी जारी रखते हैं। उन्होंने अपने ख्यालों को भटकने नहीं दिया।

मुझे ऐसे बच्चों से मिलने का मौका मिला है हालाँकि पहले टूर में वे बहुत छोटे थे, अब वे तकरीबन बीस–इक्कीस साल के गबरू–जवान हो गए हैं। उस वक्त उनके माता–पिता उन्हें मुझसे मिलवाने लाते थे, सतसंग में लाते थे उन्हें बैठना बताते थे कि इस तरह हाथ जोड़कर बैठें। इसका असर उन बच्चों पर कितना अच्छा पड़ा है।

मुझे हिन्दुस्तान और पश्चिम के काफी सारे बुज़ुर्ग भी मिलते रहते हैं, वे खुद कोई हरकत छोड़ने के लिए तैयार नहीं लेकिन चाहते हैं कि बच्चे हमारा आदर करें। सन्तमत का यह असूल है कि पहले अपने आपको सुधारें फिर ही हम दूसरों का भला कर सकते हैं। हमारी शख्सियत का ही उन पर असर होना शुरू हो जाता है।

मैं आशा करता हूँ कि माता–पिता को शुरू से ही बच्चों की अच्छी नींव रखनी चाहिए। माता–पिता के ऊपर ज़िम्मेदारी आती है। मैं कई बार शेख फरीद की कहानी बताया करता हूँ कि उनकी माता का उन पर अच्छा असर हुआ और आखिर वे परमात्मा से मिले और परमात्मा रूप ही हो गए। हां भई, इसके बारे में कहने को बहुत कुछ है, जितना भी कह लें वह थोड़ा है। मैं यही कहूंगा कि बच्चों की तरफ हमें प्रेम–प्यार से उदाहरण बनकर पेश आना चाहिए। कबीर साहब ने कहा था:

जननी जने ता भगत जन जा दाता या सूर।
नहीं तां जननी बांझ रहे ते काहे गवाए नूर।।

हमें बच्चे के अंदर इस तरह की खूबियां भरनी चाहिए जैसा कि कबीर साहब ने कहा है, नहीं तो बच्चा पैदा करने का कोई फ़ायदा नहीं। बच्चा पैदा करने से पहले हमें सोचना चाहिए क्या हम अपनी ज़िम्मेदारी निभाएंगे? जब शादी–शुदा जीवन है तो बच्चा पैदा करना कोई गुनाह नहीं। इसे किसी भी महात्मा ने गुनाह नहीं कहा लेकिन सवाल बच्चे के पालन–पोषण का है और वह ज़िम्मेदारी हम पर आती है। गुरु रामदास जी कहते हैं:

जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बाँझा।

नाम की तरफ अच्छा बच्चा ही आएगा, अच्छी आत्माएं ही आएंगी। अगर माता–पिता नाम की तरफ लगे हैं तो बच्चे भी उसी तरफ जाएंगे। गुरु रामदास जी कहते हैं कि जिस माँ का बच्चा अच्छा नहीं, भक्ति नहीं कर रहा, नाम की तरफ नहीं आ रहा, वह माँ बाँझ ही क्यों न बैठी रही? महाराज जी कहा करते थे कि सन्तमत कायरों और बुजदिलों का नहीं यह सूरमे बहादुरों का मत है, यह अपने आपको सुधारने का मत है।

हम सब जानते हैं कि सूरमा आदमी ही मैदान–ए–जंग में जीतता है। कायर की कभी जीत नहीं होती। सन्तमत हमें हमारी जिम्मेदारियों से दूर नहीं जाने देता। सन्त कहते हैं कि हमें प्रभु की तरफ से जो जिम्मेदारियां मिली हैं उन्हें निभाना हमारा पहला फर्ज है। सूरमे ही इस मैदान में जीतते हैं। आपको पता है कि काल ने हमारे शरीर के इस मैदान–ए–जंग में पाँच डाकू उतारे हुए हैं।

प्यारेयो, कोई सूरमा आदमी ही इनके साथ संघर्ष करेगा और जीतेगा। सतगुरु ने हमें शब्द–धुन के साथ लेस किया है। गुरु का दया–मेहर भरा हाथ सदा ही शिष्य के सिर पर होता है। गुरु नहीं चाहता कि मेरे किसी सतसंगी की इस मैदान–ए–जंग में हार हो। गुरु चाहता है कि ये सूरमे बहादुर बनें अगर हम सूरमे बहादुर बनेंगे तो इन पाँच डाकुओं के आगे कभी हार नहीं मानेंगे, हथियार नहीं फैंकेगे बल्कि मजबूत होकर गुरु की दया–मेहर लेकर खड़े रहेंगे।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

पवित्रता का पालन

02 मई 1977

सन्बोर्न्टन, अमेरिका

हमारे बहुत ऊंचे भाग्य हैं कि हम उस मालिक कृपाल की याद में बैठे हैं। दुनिया में बहुत सारे जीव आए हैं लेकिन मालिक की याद में बहुत थोड़े ही इकट्ठे होते हैं। आज कलयुग का ज़माना है इसमें हमारे ख्याल बहुत फैल चुके हैं, जीव को शराब–कबाब, विषय–विकारों से फुर्सत ही नहीं लेकिन भगवान ने कुछ जीवों के ऊपर बहुत भारी दया की, उनकी अंदर से चाबी मरोड़ी कि आप शाकाहारी जीवन बिताकर, विषय–विकारों से बचकर मेरी याद में बैठें। आप यह ख्याल न करें कि हम जो कुछ उस मालिक की खातिर सोच रहे हैं, मिनट–दो मिनट या घंटा लगा रहे हैं वह लेखे में नहीं है। मालिक की याद में बिताया हुआ कोई भी मिनट, सेकंड या क्षण खाली नहीं जाता, मालिक ज़रूर उसकी हाज़री लगाते हैं।

बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''जब जीव मालिक की याद में बैठता है तो उसकी पुकार सच्चखंड पहुँचती है।'' हमें जो सिमरन दिया जाता है, यह मालिक के आगे पुकार ही है। **हम सुबह एक घंटा आंखे बंद करके अभ्यास में बैठते हैं और शाम को भजन गाने के एक घंटे को बहुत उत्तम समझना चाहिए जिसमें हमें आंखे खोलकर ध्यान टिकाने का मौका मिलता है। गुरु नानक साहब कहते हैं कि जहाँ एक ही ख्याल के आदमी इकट्ठे होकर मालिक की उपासना कर रहे हों उसे भजन मंडली कहते हैं। कोशिश करें कि सब मिलकर भजन बोलें।**

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि हमारा ख्याल फैला हुआ है और हमारी आत्मा मालिक से बिछुड़ी हुई है। किस तरह हमनें अपने फैले हुए ख्याल को इकट्ठा करके अपनी आत्मा को मालिक के साथ मिलाना है।

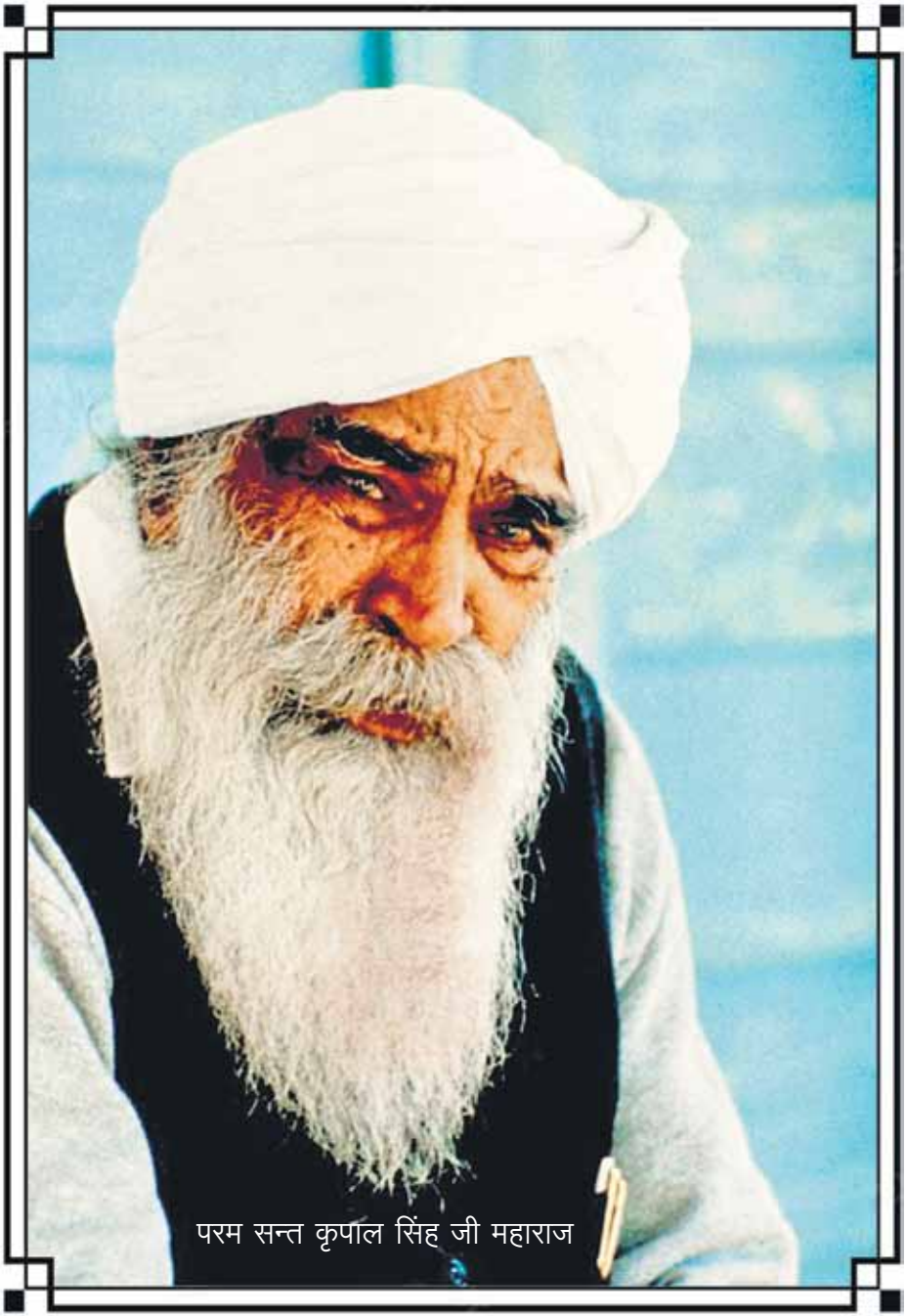

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''आप अपने मन को बाहर न जाने दें।'' हम सन्त–महात्माओं के वचनों को याद करें और उन पर अमल करें अगर हम सन्तों के वचनों पर अमल करेंगे तो हमारे अंदर विषय–विकारों की जलन बड़ी जल्दी खत्म हो जाएगी। इंसान विषयों में इस तरह भुन रहा है जिस तरह भट्टी की गरम रेत में अनाज के दाने भूनते हैं।

काम इंसान के लिए बहुत दुःखदायी बीमारी है। काम से रूह नीचे गिर जाती है, काम और नाम में बहुत भारी दुश्मनी है। जहाँ काम है वहां नाम प्रकट नहीं हो सकता, जहां नाम प्रकट हो जाता है वहां काम की वासना तक नहीं रहती। जहाँ दिन है वहां रात नहीं और जहाँ रात है वहां दिन नहीं। कामी इंसान गुरु की भक्ति नहीं कर सकता, उसके दिल से संशय खत्म नहीं होता। कामी के माथे की ज्योत बुझ जाती है। जहाँ हमने नाम जपने का शौक पैदा किया है, वहां हमें **पवित्रता का पालन** करने की कोशिश करनी चाहिए। महात्मा हमें समझाते हैं:

पंजे विषय भोगेंदेयां उम्र गवाई यार।
ऐह मन ना रजया हुण कद रजसी यार।।

सारी उम्र विषय–विकार भोगने में निकाल दी अगर अब तक हमारा मन नहीं भरा तो फिर कब भरेगा? आग के अंदर जितनी लकड़ियां डालेंगे उतनी ही लपटें और तेज हो जाएंगी। अगर इंसान यह कहे कि मैं भोग भोगकर शांति प्राप्त कर लूँगा, ऐसा बिल्कुल नहीं हो सकता बल्कि दिल में और ज़्यादा आग भड़क उठती है।

आज आप काम को गिराने में जितना स्वाद समझते हैं, उससे करोड़ों गुना ज्यादा स्वाद आपको उसे रखने में आएगा। काम कहता है, ''जो मेरी रक्षा करते हैं, तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, शिव उनकी रक्षा करते हैं।'' हमें हमेशा ही इस कीमती जौहर–रत्न को संभालकर रखना चाहिए क्योंकि यह शरीर की खास धातु है। अगर आप काम से बचेंगे, संभलेंगे तो यह आपको भजन करने में बहुत मददगार साबित होगा।

हम कहते हैं कि हमारा ध्यान नहीं टिकता यह हमारी एक बहुत बड़ी कमी है क्योंकि हम उस धन की, बीरज की रखवाली नहीं करते। आप महाभारत का इतिहास पढ़कर देखें कि भीष्म पितामह सारी ज़िंदगी ब्रह्मचारी रहे। जितने दिन सारी फ़ौज लड़ती रही थी, भीष्म पितामह अकेले ही लड़े थे। आप ब्रह्मचर्य का पालन किसी भी उम्र में कर लें, वह आपके लिए फायदेमंद रहेगा। औरत और मर्द का जोड़ा इंसानी भोग भोगने के लिए इकट्ठा नहीं हुआ, यह ज़िंदगी का सफर आसानी से तय करने के लिए इकट्ठा हुआ है। हम तो भोग में फंसकर अपने प्यार को भी खत्म कर लेते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

पाँचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार इन पांच लड़कों से बचें, फिर ही आपकी परमात्मा से लिव लगेगी लेकिन हम ज़हर भी खाए जा रहे हैं और हाए–हाए भी किए जा रहे हैं। गुरु नानक देव जी, महाराज सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी ने भी इस पर बहुत ही ज़ोर दिया है कि आप इस धन की, बीरज की रक्षा करें।

***

गुरु प्यारी साध–संगत,

बाबा जी की अपरम्पार दया से **17, 18** व **19** मई **2024** को नीचे लिखे पते पर भजन–अभ्यास और सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

महाराजा अग्रसेन भवन,
ज्वालाहेड़ी (रेड लाईट क्रासिंग),
पश्चिम विहार, नई दिल्ली – 110063
Phone-98107 94597, 99100 04131, 98101 94555

RNI No - RAJHIN/2003/9899